

5. सच्चवाणस्स सावित्री



‘सावित्री’ म्हटले की, आपल्या डोळ्यांसमोर सावित्रीबाई फुले आणि सत्यवानाची सावित्री यांचे कणखर, धैर्यशील, बुद्धिमान व संकटकाळातही संयम न सोडणारे व्यक्तिमत्व उभे राहते.

दुष्टांना आणि रूढी परंपरांना न जुमानता सावित्रीबाई फुलेंनी महिलांसाठी शाळा चालवून अज्ञानाच्या जोखडीतून स्त्रियांची मुक्तता केली तर सत्यवानाच्या सावित्रीने यमाच्या मृत्युफाशातून स्वतःच्या पतीची मुक्तता केली. अशा या धैर्यशील, बुद्धिमान, चतुर व्यक्तिमत्व असलेल्या सत्यवानाच्या सावित्रीचा परिचय नवीन पिढीला होणे गरजेचे आहे.

सत्यवानाची सावित्री ही अश्वपतीची एकुलती एक मुलगी. ती तारुण्यात आल्यावर आपल्या जीवनसाथीदाराची निवड ती स्वतःच करते. परंतु दुदैवाने तिचा पती अल्पायुषी ठरतो. यमराज आपल्या पतीचा प्राण घेऊन जात असताना सामान्य स्त्रीप्रमाणे ती आक्रोश करत न बसता यमाच्या पाठीमागून जाऊ लागते. तेव्हा यम आणि सावित्री यांच्यांत जो संवाद झाला तो सावित्रीची बुद्धिमत्ता, धैर्य, संयम इ. विविध गुण स्पष्ट करणारा असून प्राचीनकालीन भारतीय स्त्रियांचे श्रेष्ठत्व स्पष्ट करणाराही आहे. तो संवाद संक्षिप्तपणे या पाठात अनुवादित केलेला आहे. तेव्हा तो आदर्श डोळ्यासमोर ठेऊन आजच्या तरुण भारतीय स्त्रियाही प्रतिकूल स्थितीवर मात करून आपणही सत्यवानाच्या व फुलेंच्या सावित्रीप्रमाणे धैर्यशील, बुद्धिमान, सबला स्त्रिया असल्याचे दाखवून देतील असा या पाठाचा उद्देश आहे.

- जमराय** - सावित्री तुमं मम मग्गे किं एसि? तव पइस्स मच्चू होइ। तओ पइस्स देहस्स अंतसक्कारं करेह।
- सावित्री** - पइस्स मग्गे निरंतरं गच्छह त्ति भारहीय नारीए धम्मं अत्थि। तेण अहं मम पइस्स मग्गे एमि।
- जमराय** - तुज्झ पइणिट्ठा दट्ठूण ममं अच्चंतं आणंदं होइ। तओ पइस्स पाणं मुंचिऊण अण्णं कोवि वरं मग्गसु।
- सावित्री** - मम ससुरं दिट्ठी नत्थि तस्स दिट्ठि देह।
- जमराय** - 'आमं ति।' एण्हिं तुमं गच्छ। चलणस्स निरत्थकं कट्ठं न घेसि।
- सावित्री** - मम पई जत्थ गच्छिस्सइ तत्थ अहं वि गच्छिस्सामि। पइसमं गच्छंताण मम किंचि वि कट्ठं न होइ। बीओ तुमं सहावं वि सुपुरिसाण इव अत्थि तेण अहं तुमं समं बोल्लामि।
- जमराय** - भो सावित्री ! तुज्झ वयणेण मम हिययं पसन्नं होइ। पइस्स पाणं मुंचिऊण अण्णं को वि वरं मग्गसु।
- सावित्री** - मम ससुरस्स गय-विहवं पुणो पाविस्सइ।
- जमराय** - तहेव च्चिय होउ। एण्हिं ता तुमं गच्छ।
- सावित्री** - जमराय तुमं सव्वं धम्म-नियमं जाणसि तेण तुमं यमं त्ति नामेण संबोहइ। बीओ तुमं सत्तुस्स वि हियं चिंतसि। दीणजणाण उवरिं वि अणुकंपा करेसि।
- जमराय** - सावित्री! तुज्झ वयणं तण्हाजीवस्स जलं इव अत्थि। तं सुणिऊण मम हिययं संतुट्ठं होइ। तओ सच्चवाणस्स पाणाए विणा अण्णं वरं मग्गसु ।
- सावित्री** - मम पिउणो वंसवड्डीए एगं वि पुत्तं नत्थि । ताव तस्स पुत्तं भविस्सइ।
- जमराय** - तहेव च्चिय होउ। एण्हिं ता वि तुमं गच्छसु।
- सावित्री** - मम पइ तुमं समीवं अत्थि। पइं मुंचिऊण अहं कहिं गच्छामि? बीयं तुमं मम सव्वं इच्छा पुण्णं करेसि। अण्णं, तुमं मम सव्ववयणं सुणिऊण तेण पमाणं करित्था। तओ एवं पयारस्स दयावंतस्स मुंचिऊण अहं अण्णत्तं कहिं ण गच्छामि।
- जमराय** - सावित्री, एवं पयारस्स तुज्झ वयणं सुणिऊण मम वि हियए दयाभावं निम्माणं होइ। तओ वरं मग्गसु।
- सावित्री** - मए पुत्तं होस्सइ।
- जमराय** - तव इच्छा सिग्घं पुण्णं होउ। एण्हिं ता गच्छ।
- सावित्री** - एयं विस्सं संत-सुपुरिसस्स आयार-वियारेण धम्मनीईएण च्चिय तरइ। भारहीय सक्कईए पइस्ससमं च्चिय पुत्तं मण्णइ। एयं तुमं पि जाणसि।
- जमराय** - भो चरित्तसंपण्ण-इत्थीए! तुमं एयं वयणेण अहं अहियं आणंदं होमि। ता वरं मग्गसु!
- सावित्री** - तुम्हे मए पुत्तस्स वरं देसि। तेण अहं तुमं आभारं मण्णामि। किंतु मम पई मए समं नत्थि। ता मए पुत्तं कहं होइ? जइ इयराओ पुरिसाओ पुत्तं पावइ ता लोगा मए असइं संबोहिस्सन्ति। बीयं पइस्स विणा अहं मयवयं अत्थि। तओ पइविणा मए किंपि इच्छा नत्थि।
- जमराय** - सावित्री! तुमं अच्चंतं चउरा इत्थि अत्थि। तुमए मए संभासणम्मि जियसि। तुमं सच्चं सव्वसेट्ठं इत्थी अत्थि। तव एयं पि इच्छा पुण्णं होउ त्ति भणिऊण संतुट्ठ-हियएण जमराएण सावित्रीए पइस्स पाणं वि देइ।

मच्चू - मृत्यू

पई - पती

मुंचिऊण - सोडून

वरं - इच्छा, अपेक्षा, आकांक्षा

ससुर - सासरे

आमं - कबूल करणे, मान्य करणे

कट्टं - कष्ट

निरत्थकं - निरर्थक, व्यर्थ

हियं - हित लाभ

तण्हा - तहानलेल्या

पिउणो - पिताच्या

वड्डीए - वृद्धी, वाढीसाठी

समीवं - समवेत, जवळ

कहिं - कोठे

अण्णत्तं - अन्यत्र

इत्थीए - स्त्रीने

अहियं - अधिक

वत्तमाण - वर्तमानकाळातील

कहं - कशी

इयराओ - इतरांपासून

बोहि - बुद्धी

इमा - अशी, ही

बीओ - दुसरे

इव - प्रमाणे, समान, सारखे

हियय - हृदय, मन

विहवं - वैभव

पाविस्सइ - प्राप्त होऊ दे

एण्हं - आता

संबोहइ - संबोधने, उच्चारणे

सत्तुस्स - शत्रूचे

तव - तुझी

सिग्घं - ताबडतोब

विस्स - विश्व, जग

आयार - आचार

तरइ - तरणे, चालणे, अस्तित्वात असणे

सक्कईए - संस्कृतीत

मण्णइ - मान्यता असणे

असइं - असती, चारित्र्यहीन

मयवं - मृतवत

मए - मला, माझी

संभासणम्मि - बोलण्यात

जियसि - जिंकलेस

वसणं - संकट

स्वाध्याय

कृती करा

1 एका वाक्यात उत्तरे लिहा.

- 1) सावित्री कोणाची मुलगी होती?
- 2) यमाने सावित्रीस मृत शरीराचे काय करावयास सांगितले.?
- 3) सावित्रीने प्रथम वरदानासाठी कोणती इच्छा व्यक्त केली?

- 4) यमाने इच्छित वरप्राप्तीसाठी सावित्रीस कोणती अट घातली होती ?
- 5) सावित्रीने स्वतःसाठी कोणता वर मागितला ?
- 6) भारतीय स्त्रीचे प्रमुख वैशिष्ट्य कोणते ?

2 प्राकृतातील शब्द लिहा.

- | | | | |
|-----------|----------------------|------------|----------------------|
| 1) मार्ग | <input type="text"/> | 5) दुसरे | <input type="text"/> |
| 2) मृत्यू | <input type="text"/> | 6) अन्यत्र | <input type="text"/> |
| 3) सोडून | <input type="text"/> | 7) शिवाय | <input type="text"/> |
| 4) सासरे | <input type="text"/> | 8) आता | <input type="text"/> |

3 वर्ण बदल स्पष्ट करा

- | | |
|-------------|----------|
| 1) पइ | 5) सत्तू |
| 2) सावित्ती | 6) सव्व |
| 3) जमराय | 7) सहाव |
| 4) विहव | 8) पाण |

4 रूपे ओळखा.

- | | |
|-------------|-----------|
| 1) पाविस्सइ | 5) होउ |
| 2) ससुरस्स | 6) अत्थि |
| 3) हियं | 7) होइ |
| 4) सुणिरुण | 8) गच्छसि |

5 व्यक्तिचित्रण रेखाटा.

- | | |
|-------------|----------|
| 1) सावित्री | 2) यमराज |
|-------------|----------|

6 खालील शब्दांसाठी पाठातील शब्द शोधा.

- | | | | |
|-----------|----------------------|-----------|----------------------|
| 1) स्त्री | <input type="text"/> | 3) दुसरा | <input type="text"/> |
| 2) वैभव | <input type="text"/> | 4) मृत्यू | <input type="text"/> |

7 उपक्रम :- प्रस्तुत पाठाप्रमाणे एखादी कथा नाट्यात रूपांतरित करा.

